The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 1 | January 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

A Study of Attitude toward Drugs and Alcohol among University Hostel Students

Kanak Lata Singh[1], Pawak Agrawal[2] & Dr. Tanuja Bhatt[3]

[1] Former M. Ed. Student, Department of Advanced Educational Research and Teaching of Educational Foundations, Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur Nagar, U.P., Bharat
E-Mail: rathourkanak9919@gmail.com, ORCID: https://orcid.org/0009-0003-9711-6228

[2]Senior Research Fellow, Department of Advanced Educational Research and Teaching of Educational Foundations, Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur Nagar, U.P., Bharat
E-Mail: pawak_phd21_edu@csjmu.ac.in, ORCID: https://orcid.org/0009-0002-6946-5001

[3]Assistant Professor, Department of Advanced Educational Research and Teaching of Educational Foundations, Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur Nagar, U.P., Bharat
E-Mail: tanuja@csjmu.ac.in, ORCID: https://orcid.org/0009-0000-4203-5293

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.18648111

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 26-01-2026

Published: 10-02-2026

Keywords:

विश्वविद्यालय, छात्रावास, विद्यार्थी, ड्रग एवं अल्कोहल, अभिवृत्ति

ABSTRACT

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के विकास का मूल आधार होती है, क्योंकि यह समाज को जागरूक और प्रगतिशील बनाती है। स्वामी विवेकानंद के अनुसार, शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मानव निर्माण है। एक शिक्षित समाज, देश को उच्च आदर्शों, परंपराओं और संस्कृति की धरोहर को सँजोने में सहायक बनाता है। वर्तमान समय में, युवा पीढ़ी पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव बढ़ रहा है, जिससे पारंपरिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। विशेष रूप से, विद्यार्थियों में ड्रग और अल्कोहल के प्रति आकर्षण बढ़ता जा रहा है, जो समाज के लिए गंभीर चिंता का विषय है। इस बढ़ती प्रवृत्ति के पीछे बेरोजगारी, प्रेम में असफलता, सामाजिक विद्रोह, प्रतिस्पर्धा का दबाव और एकाकीपन जैसे कई कारक जिम्मेदार हैं। शोधों से यह स्पष्ट हुआ कि नशा व्यक्ति की सोचने–समझने की शक्ति को कमजोर कर देता है और शिक्षा पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। विद्यार्थियों में ड्रग और अल्कोहल की प्रवृत्ति रोकने के लिए जागरूकता और शिक्षा की आवश्यकता है। शोध अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि विश्वविद्यालय छात्रावास में विज्ञान और गैर–विज्ञान वर्ग के छात्रों के बीच ड्रग एवं अल्कोहल

के प्रति अभिवृत्ति में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। साथ ही यह निष्कर्ष निकला कि छात्रों के मानसिक और सामाजिक वातावरण का उनकी आदतों पर प्रभाव पड़ता है। इस समस्या के समाधान के लिए शिक्षाप्रणाली में सुधार और नशे के दुष्प्रभावों पर जागरूकता फैलाने की आवश्यकता है।

1. प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र की प्रगति का आधार उसकी प्रबुद्ध जनशक्ति होती है जिसका निर्माण सुव्यवस्थित एवं व्यापक शिक्षा प्रणाली के माध्यम से होता है। जंतु जगत के अंतर्गत ईश्वर की समस्त कृतियों में मानव ही सर्वश्रेष्ठ है। ईश्वर ने उसे अन्य जीवों से अधिक बुद्धि प्रदान की है। जीवों में सीमित क्षमता होती है जबकि मनुष्य की क्षमताएं असीमित होती हैं। मनुष्य की क्षमताओं के अंतर्गत उसका चिंतन, शक्ति, बुद्धि विशेष उल्लेखनीय है, किन्तु उसका शिक्षित होना अति आवश्यक है। शिक्षित मनुष्य से ही एक शिक्षित समाज का निर्माण होता है और एक अच्छे समाज के निर्माण के लिए हम शिक्षा को एक शक्तिशाली अस्त्र के रूप में प्रयोग कर सकते हैं, जिससे समाज में वांछित परिवर्तन लाया जा सके। शिक्षा ही सर्वांगीण विकास की नींव है। जैसा कि स्वामी विवेकानंद ने भी कहा है कि "शिक्षा मनुष्य में अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है एवं शिक्षा का परम उद्देश्य मानव निर्माण करना है" (शर्मा, 2008)।

शिक्षा के द्वारा समाज भावी पीढ़ी के बालकों को उच्च आदर्शों, आशाओं, आकांक्षाओं, विश्वासों तथा परंपराओं आदि सांस्कृतिक संपत्ति को इस प्रकार से हस्तांतरित करता है कि उसके हृदय में देश प्रेम तथा त्याग की भावना प्रज्ज्वलित हो उठती है। जब देश भावनाओं तथा आदर्श से भरे हुए बालक तैयार होकर समाज तथा देश की सेवा का प्रण लेकर मैदान में निकलेंगे तथा अपने जीवन में त्याग से परिपूर्ण कार्य करेंगे तो समाज भी निरंतर उन्नति के शिखर पर चढ़ता ही रहेगा। इस प्रकार व्यक्ति तथा समाज दोनों के ही विकास में शिक्षा परम आवश्यक है। बालक की प्रारंभिक शिक्षा उसके गृह में होती है। प्रत्यक्ष रूप से उसे परिवार एवं समाज के मूल्यों का भी ज्ञान कराया जाता है किंतु बालक के ज्ञान का क्षेत्र, विचार व मूल्यों की कोई सीमित सीमा नहीं होती है। जब बालक परिवार से निकलकर विद्यालय जाने लगता है तो उसे समाज को सुंदर व सुदृढ़ बनाने में सहायक मूल्यों का भी ज्ञान कराया जाता है। इसका तात्पर्य है कि शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। प्रारंभ में वह अनौपचारिक शिक्षा परिवार से प्राप्त करता है, किंतु जैसे–जैसे वह बड़ा होता है अपनी आवश्यकताओं को स्वयं ही पूर्ण करना सीख जाता है (मिश्रा, 2016)। शिक्षा वह प्रकाश है जिसके द्वारा बालक की समस्त शारीरिक, मानसिक, सामाजिक आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है, इससे वह समाज का उत्तरदायी घटक एवं राष्ट्र का प्रखर चरित्र संपन्न नागरिक बनकर समाज की सर्वांगीण उन्नति में अपनी शक्ति का उत्तरोत्तर प्रयोग करने की भावना से ओत–प्रोत होकर अपनी संस्कृति तथा सभ्यता को पुनर्जीवित एवं पुनर्स्थापित करने के लिए प्रेरित हो जाता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि शिक्षा ही हमारे पथ प्रदर्शक के रूप में कार्य करती है और एक सशक्त समाज और नवयुग का निर्माण करती है।

नवयुग की दहलीज पर खड़े समाज को युवा पीढ़ी से अनेक आशाएँ होती हैं, यह आशाएँ विद्यार्थियों को दी गयी संस्कृति के अनुरूप होती हैं, किंतु वर्तमान समय मे विद्यार्थी वर्ग पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव अधिक दिखाई देता है जिसके कारण हमारे मूल्य एवं परंपराओं का कहीं न कहीं ह्रास होता जा रहा है। मूल्य एवं परंपराओं की उत्कृष्टता हमारी शिक्षा की ही देन है क्योंकि मूल्य एवं परंपराओं पर कहीं न कहीं शिक्षा अपना प्रभाव अवश्य डालती है। परंतु आज के समय मे युवा वर्ग के विद्यार्थी अपने पथ से दिग्भ्रमित हो रहे हैं, जो एक चिंताजनक विषय है। वर्तमान समय में पाश्चात्य संस्कृति को देखते हुए विद्यार्थियों में ड्रग एवं एल्कोहल के सेवन के प्रति तीव्र लालसा उत्पन्न होती दिखाई पड़ रही है जो कि एक चिंताजनक विषय के रूप में समाज के सामने प्रतीत है। 1976 मे गठित 'नेशनल कमिटी ऑन ड्रग अडिक्शन' ने सर्वेक्षण किया और पाया कि सबसे अधिक, युवा वर्ग के विद्यार्थी ड्रग एवं एल्कोहल की चपेट मे हैं (संजय, 2019)। ड्रग एवं एल्कोहल के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति बढ़ने के कई कारक है जैसे– बेरोजगारी, प्रेम में हताशा, सद्शिक्षा का अभाव, भ्रामक विचारों में उलझना, सामाजिक एवं पारिवारिक अनुशासन के प्रति विद्रोह की भावना, हाई प्रोफाइल जीवनशैली की लालसा, एकाकीपन, प्रतिस्पर्धा में पिछड़ने का डर आदि अनेक कारण अवसाद की वजह हो सकते हैं।

इन्हीं अवसादों से बचने के लिए विद्यार्थी ड्रग एवं एल्कोहल के सेवन की चपेट मे आ जाते हैं और इन्हीं के साथ उनमें और भी नाना प्रकार के सामाजिक विकार उत्पन्न होने लगते हैं। जिसके कारण समाज में वैमनस्यता बढ़ती जा रही है जिसे रोकना और समाप्त करना आवश्यक है। इसके लिए सर्वप्रथम हमें विद्यार्थियों में ड्रग एवं एल्कोहल के प्रति उनकी अभिवृत्ति को चिह्नित करना आवश्यक है, जिसे जानकर उसकी रोकथाम हेतु पूर्व नियोजित पाठ्यक्रम का निर्माण किया जा सके। जिससे न केवल विद्यार्थियों वरन् उनके परिवारजनों को भी इससे बचने हेतु जागरूक किया जा सके। जिससे वास्तविक रूप में एक सशक्त एवं शिक्षित समाज का निर्माण हो सके।

2. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

किसी भी राष्ट्र का निर्माण समाज के नागरिकों द्वारा होता है अतः राष्ट्र के लिए समाज का सशक्त होना आवश्यक है। एक अच्छे समाज के निर्माण के लिए अच्छे नागरिकों का होना आवश्यक है। इस हेतु सशक्त शिक्षा की आवश्यकता पड़ती है। कहा जाता है कि देश के विद्यार्थी देश का भविष्य होते हैं, विद्यार्थी देश का नाम रोशन करते हैं। परंतु वर्तमान समय के आधुनिक परिवेश की चकाचौंध में विद्यार्थियों में ड्रग एवं एल्कोहल की लत बढ़ती जा रही है। इसकी आदत बड़े शहरों से होते हुए छोटे शहरों–कस्बों तक भी बढ़ती जा रही है। जिसका निदान आवश्यक है। ड्रग एवं एल्कोहल का प्रभाव विद्यार्थियों की शिक्षा पर अधिक पड़ता है। आधुनिक युग में जहाँ देश इतनी प्रगति कर रहा है एवं नित–नित उच्च शिखर को छू रहा है, देश–विदेश में अपना मुकाम बना रहा है, वहीं देश का भविष्य कहे जाने वाले हमारे विद्यार्थियों में ड्रग एवं एल्कोहल के सेवन के प्रति लालसा बढ़ती जा रही है। इस हेतु हमें उनकी अभिवृत्ति को जानना आवश्यक है। यह हमारे समाज के लिए एक बहुत ही गंभीर समस्या है। विद्यार्थियों में ड्रग एवं एल्कोहल की आदत का प्रभाव उनके जीवन के प्रत्येक पहलू पर पड़ता है। इसलिए इस विषय पर अध्ययन करना

आवश्यक है। विद्यार्थी जीवन के अनेक पहलू हैं परंतु सभी पहलू का एक साथ अध्ययन करना संभव नहीं है। अतः इस शोध कार्य में विश्वविद्यालय छात्रावास के विद्यार्थियों में ड्रग एवं अल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

3. संबंधित साहित्य का अध्ययन

- सिंह, संजय (2019) ने 'युवाओं में नशे के कारण गिरता शिक्षा का स्तरः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन' नामक शोध विषय पर अवलोकन कर पाया कि नशे का 'अध्ययन आदत' पर असर कुछ सीमा तक पड़ता है तथा इससे व्यक्ति के जीवन के सभी पक्ष से प्रभावित होते हैं। यह व्यक्ति की सोचने–समझने की शक्ति को क्षीण करता है। यदि व्यक्ति इस पर निर्भर हो जाता है तो कहा जा सकता है नशा एक भयंकर बीमारी है, जो देश के युवाओं को कमजोर कर रहा है।

- श्रीवास्तव, आनंद एवं जैन, रंजना (2018) ने 'नशा करने वाले तथा न करने वाले विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर के किशोरों के समायोजन का अध्ययन' विषय पर शोध किया और इस अध्ययन में पाया कि नशा करने वाले उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर वाले किशोरों में समायोजन का स्तर नशा न करने वाले किशोरों से बहुत निम्न है।

- सिंह, मेहताब एवं निवास, राम (2017) ने 'एटीट्यूड ऑफ सीनियर सेकेंडरी स्कूल टुवर्ड्स एल्कोहल एण्ड ड्रग विद रेस्पेक्ट टू जेंडर, रेजिडेंशियल बैकग्राउंड एण्ड टाइप ऑफ फैमिली' नामक विषय पर शोध अध्ययन किया और पाया कि माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में ड्रग एवं एल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति में लिंग के संबंध में महत्वपूर्ण अंतर मौजूद है। छात्राओं की तुलना में छात्रों का ड्रग एवं एल्कोहल के प्रति अधिक झुकाव है, साथ ही पाया कि शहरी क्षेत्रों के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों की तुलना में ड्रग एवं एल्कोहल के प्रति अधिक अनुकूल प्रवृत्ति है। परिवारों के संबंध में एल्कोहल एवं ड्रग के प्रति माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया।

- सिंह, मेहताब (2017) ने 'एटीट्यूड ऑफ एडॉलसेंट्स टुवर्ड्स एल्कोहल एण्ड ड्रग इन रिलेशन टू दीयर पैरेंटिंग एण्ड पीयर प्रेशर' नामक विषय पर शोध अध्ययन किया और पाया कि जिन युवाओं के माता–पिता उनके साथ अधिक समय व्यतीत नहीं करते हैं उन युवाओं में उनके साथियों के दबाव का शिकार होने की संभावना अधिक होती है। जबकि जो युवा संयुक्त परिवारों में रहते हैं उन पर उनके साथियों के दबाव का शिकार होने की संभावनाएं अपेक्षाकृत कम होती हैं।

- मिश्रा, किरण (2016) ने 'विद्यार्थियों में नशे की प्रवृत्ति के संदर्भ में असुरक्षा की भावना और मानसिक स्वास्थ्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन' विषय पर अध्ययन किया और पाया कि नशे की आदत असुरक्षा की भावना को प्रत्यक्ष रूप

से प्रभावित करती है। नशा करने से विद्यार्थियों में असुरक्षा की भावना बढ़ती है, उनका समाज में समायोजन भी असंतुलित होता है।

- सिंह, शीला (2014) ने 'मादक पदार्थों का सेवन करने वाले परिवारों के किशोर विद्यार्थियों के समायोजन एवं आत्मबोध का अध्ययन' विषय पर शोध किया और पाया कि सामान्य जाति के परिवारों के किशोर विद्यार्थियों में अनुसूचित जाति के परिवारों के किशोर विद्यार्थियों की अपेक्षा समायोजन एवं आत्मबोध अधिक है।

विभिन्न शोधों का अध्ययन करने के पश्चात पाया गया कि युवाओं में नशे के कारण गिरता शिक्षा का स्तर, ए स्टडी ऑफ लाइफ स्ट्रेस एंड सोशल सपोर्ट ऑफ ड्रग एडिक्शन, विद्यार्थियों में नशे की प्रवृत्ति के संदर्भ में असुरक्षा की भावना और मानसिक स्वास्थ्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन, मादक पदार्थों का सेवन करने वाले परिवारों के किशोर विद्यार्थियों के समायोजन एवं आत्मबोध का अध्ययन, एटीट्यूड ऑफ सीनियर सेकेंडरी स्कूल टुवार्ड्स एल्कोहल एण्ड ड्रग विथ रिस्पेक्ट टू जेंडर, रेजिडेंशियल बैकग्राउंड एण्ड टाइप ऑफ फैमिली, तथा एटीट्यूड ऑफ एडॉलसेंट्स टुवार्ड्स एल्कोहल एण्ड ड्रग इन रिलेशन टू देयर पेरेंटिंग एण्ड पियर प्रेशर पर तो बहुत से कार्य हो चुके हैं लेकिन विश्वविद्यालय छात्रावास के विद्यार्थियों में ड्रग एवं एल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति पर कोई कार्य नहीं हुआ है या हमारी पहुँच से दूर है। अतः इस पर भी कार्य करने की आवश्यकता हुई, जिसके कारण इस विषय पर शोध करने का निश्चय किया गया।

4. समस्या कथन

विश्वविद्यालय छात्रावास के विद्यार्थियों में ड्रग एवं अल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

5. अध्ययन के उद्देश्य

1. विश्वविद्यालय छात्रावास के विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में ड्रग एवं एल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. विश्वविद्यालय छात्रावास के गैर–विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में ड्रग एवं एल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. विश्वविद्यालय छात्रावास के विज्ञान वर्ग एवं गैर–विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में ड्रग एवं एल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

6. अध्ययन की परिकल्पना

1. विश्वविद्यालय छात्रावास के विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में ड्रग एवं एल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति के फलांकों के मध्यमान में सार्थक अंतर नहीं है।

2. विश्वविद्यालय छात्रावास के गैर विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में ड्रग एवं एल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति के फलांकों के मध्यमान में सार्थक अंतर नहीं है।
3- विश्वविद्यालय छात्रावास के विज्ञान वर्ग एवं गैर–विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में ड्रग एवं एल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति के फलांकों के मध्यमान में सार्थक अंतर नहीं है।

7. शोध प्रविधि एवं उपागम

प्रस्तुत शोध कार्य में विवरणात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण प्रविधि के अंतर्गत मात्रात्मक उपागम का प्रयोग किया गया है।

8. जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में उत्तर प्रदेश राज्य के छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर के छात्रावास में निवास करने वाले स्नातक स्तर के विज्ञान वर्ग एवं गैर विज्ञान वर्ग के सभी विद्यार्थी शोध की जनसंख्या के रूप में सम्मिलित हैं।

9. न्यादर्श

न्यादर्श के चयन हेतु उत्तर प्रदेश राज्य के छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर के छात्रावास में निवास करने वाले स्नातक स्तर के विज्ञान वर्ग एवं गैर विज्ञान वर्ग के 120 विद्यार्थियों (60 छात्र एवं 60 छात्रा) का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्श (स्ट्रेटीफाइड रैंडम सैंपलिंग) विधि के माध्यम से सुनिश्चित किया गया है।

10. शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में 'नेशनल साइकोलॉजिकल कार्पोरेशन, आगरा' द्वारा प्रकाशित तथा पूर्वा जैन एवं अमित देवलिया द्वारा निर्मित मापनी 'स्केल ऑफ एटीट्यूड टुवर्ड्स ड्रग एवं अल्कोहल' (हिंदी एवं अंग्रेजी) नामक मानक उपकरण का प्रयोग किया गया है।

11. सांख्यिकी विधियाँ

प्रस्तुत शोध कार्य में परिकल्पनाओं की पुष्टि के लिए सांख्यिकी की प्राचलिक विधि का प्रयोग किया गया है, जिसके अंतर्गत मध्यमान, मानक विचलन तथा टी–परीक्षण की गणना की गई है।

12. परिसीमन

प्रस्तुत शोधकार्य उत्तर प्रदेश राज्य के छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर नगर के छात्रावास तक ही सीमित है।

13. विश्लेषण एवं व्याख्या

उद्देश्य 01– विश्वविद्यालय छात्रावास के विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में ड्रग एवं अल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

सांख्यिकीय परिकल्पना $H_{0\ 01}$ – विश्वविद्यालय छात्रावास के विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में ड्रग एवं अल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति के फलांकों के मध्यमान में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 1

विज्ञान वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	मुक्तांश	सार्थकता स्तर	टी मान	परिणाम
छात्र	30	61.1	12.24	2.91	58	0.05	1.37	असार्थक
छात्राएं	30	65.03	9.86					

तालिका 1. विश्वविद्यालय छात्रावास के विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में ड्रग एवं अल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति का सांख्यिकीय मान

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 1 से स्पष्ट है कि विश्वविद्यालय छात्रावास के विज्ञान वर्ग के छात्रों की ड्रग एवं अल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 61.10 एवं मानक विचलन 12.24 है, तथा छात्राओं की ड्रग एवं अल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 65.03 तथा मानक विचलन 9.86 है तथा मानक त्रुटि 2.91 है। इस गणना का टी–परीक्षण मान 1.37 प्राप्त हुआ, जो कि 0.05 सार्थकता स्तर के मुक्तांश (कि) 58 पर टी–सारणी मान 2.0040 से कम है, अतः मान सार्थक नहीं पाया गया। जिसके फलस्वरूप शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हुए कहा जा सकता है कि विश्वविद्यालय छात्रावास के विज्ञान वर्ग के छात्र और छात्राओं में ड्रग एवं अल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान में सार्थक अंतर नहीं है।

मूल स्कोर	व्याख्या	विश्वविद्यालय छात्रावास के विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राएं (प्रतिशत में)					
		छात्र संख्या	छात्र प्रतिशत	छात्रा संख्या	छात्रा प्रतिशत	कुल संख्या	कुल प्रतिशत
101-130	उच्च सकारात्मक अभिवृत्ति	0	0	0	0	0	0
61-100	सकारात्मक अभिवृत्ति	17	56.67	20	66.67	37	61.67
51-60	मध्यमार्गी अभिवृत्ति	6	20	7	23.33	13	21.67
30-50	निम्न नकारात्मक अभिवृत्ति	7	23.33	3	10	10	16.67
30 and below	उच्च नकारात्मक अभिवृत्ति	0	0	0	0	0	0
योग		30	100	30	100	60	100

तालिका 2. विश्वविद्यालय छात्रावास के विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में ड्रग एवं अल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति के मूल प्राप्तांक प्रतिशत की तुलना तालिका

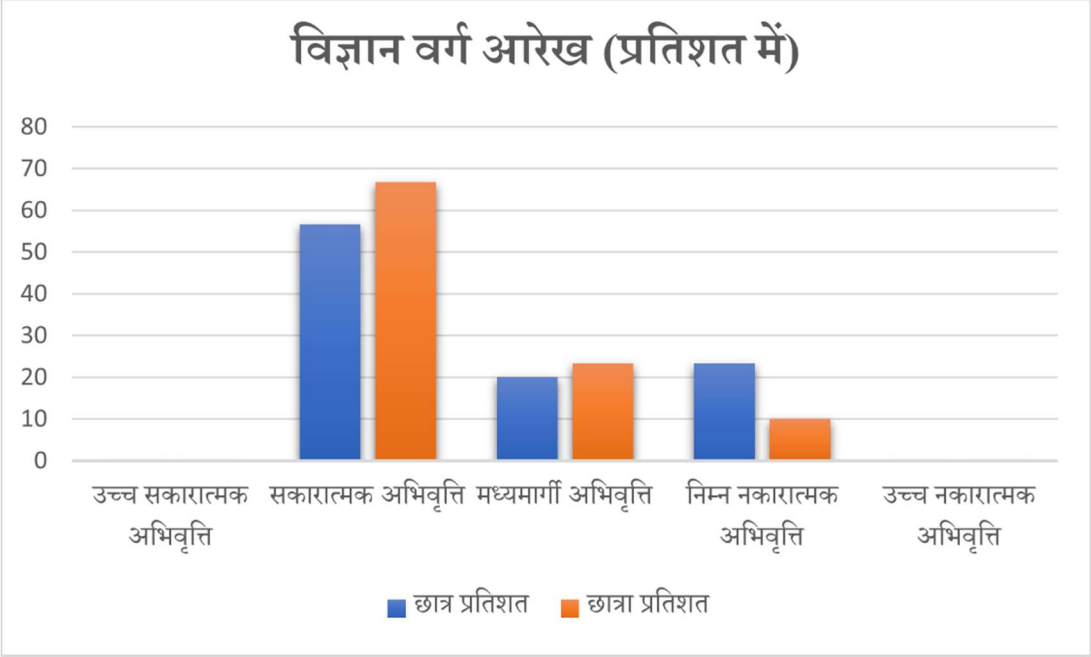

आरेख 1. विश्वविद्यालय छात्रावास के विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में ड्रग एवं अल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति के मूल प्राप्तांक की तुलना का आरेखीय प्रदर्शन

उपर्युक्त संपूर्ण विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि विश्वविद्यालय छात्रावास के विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में ड्रग एवं अल्कोहल के प्रति लगभग समान अभिवृत्ति है, क्योंकि दोनों के मध्य गणना मान (ज मान) 1.37 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर पर निर्धारित तालिका मूल्य 2.0040 से कम है। अतः मान सार्थक नहीं पाया गया जिसका तात्पर्य यह हुआ कि शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है और यह निष्कर्ष निकलता है कि विश्वविद्यालय छात्रावास के विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में ड्रग एवं अल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान में सार्थक अंतर नहीं है अर्थात दोनों ही समान प्रकार की अभिवृत्ति रखते हैं। विश्वविद्यालय छात्रावास के विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में अंतर नहीं पाए जाने का कारण उनकी शिक्षा के प्रति रुचि, बुद्धिलब्धि, जिज्ञासा, सामाजिक वातावरण, पारिवारिक वातावरण, छात्रावास का वातावरण, विश्वविद्यालय वातावरण, मनोवैज्ञानिक वातावरण का समान होना हो सकता है।

उद्देश्य 02– विश्वविद्यालय छात्रावास के गैर–विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में ड्रग एवं अल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

सांख्यिकीय परिकल्पना $H_{0\ 02}$ – विश्वविद्यालय छात्रावास के गैर–विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में ड्रग एवं अल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति के फलांकों के मध्यमान में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका

गैर विज्ञान वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	मुक्तांश	सार्थकता स्तर	टी मान	परिणाम
छात्र	30	60.76	10.71	2.96	58	0.05	2.26	सार्थक
छात्राएं	30	67.36	11.82					

तालिका 3. विश्वविद्यालय छात्रावास के गैर–विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में ड्रग एवं अल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति का सांख्यिकीय मान

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 3 से स्पष्ट है कि विश्वविद्यालय छात्रावास के गैर विज्ञान वर्ग के छात्रों की ड्रग एवं अल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 60.76 एवं मानक विचलन 10.71 है तथा छात्राओं की ड्रग एवं अल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 67.36 तथा मानक विचलन 11.82 है एवं मानक त्रुटि 2.96 है। इसका टी–परीक्षण मान 2.26 प्राप्त हुआ, जो कि 0.05 सार्थकता स्तर के मुक्तांश (df) 58 पर टी–सारणी मान 2.0040 से अधिक है, अतः मान सार्थक पाया गया। जिसके फलस्वरूप शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करते हुए कहा जा सकता है कि विश्वविद्यालय छात्रावास के गैर–विज्ञान वर्ग के छात्र और छात्राओं में ड्रग एवं अल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान में सार्थक अंतर है।

मूल स्कोर	व्याख्या	विश्वविद्यालय छात्रावास के गैर-विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राएं (प्रतिशत में)					
		छात्र संख्या	छात्र प्रतिशत	छात्रा संख्या	छात्रा प्रतिशत	कुल संख्या	कुल प्रतिशत
101-130	उच्च सकारात्मक अभिवृत्ति	0	0	0	0	0	0
61-100	सकारात्मक अभिवृत्ति	16	53. 33	22	73.33	38	63.33
51-60	मध्यमार्गी अभिवृत्ति	10	33.33	5	16.66	15	25
30-50	निम्न नकारात्मक अभिवृत्ति	4	13. 33	3	10	7	11.66
30 and below	उच्च नकारात्मक अभिवृत्ति	0	0	0	0	0	0
योग		30	100	30	100	60	100

तालिका 4. विश्वविद्यालय छात्रावास के गैर–विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में ड्रग एवं अल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति के मूल प्राप्तांक की तुलना तालिका

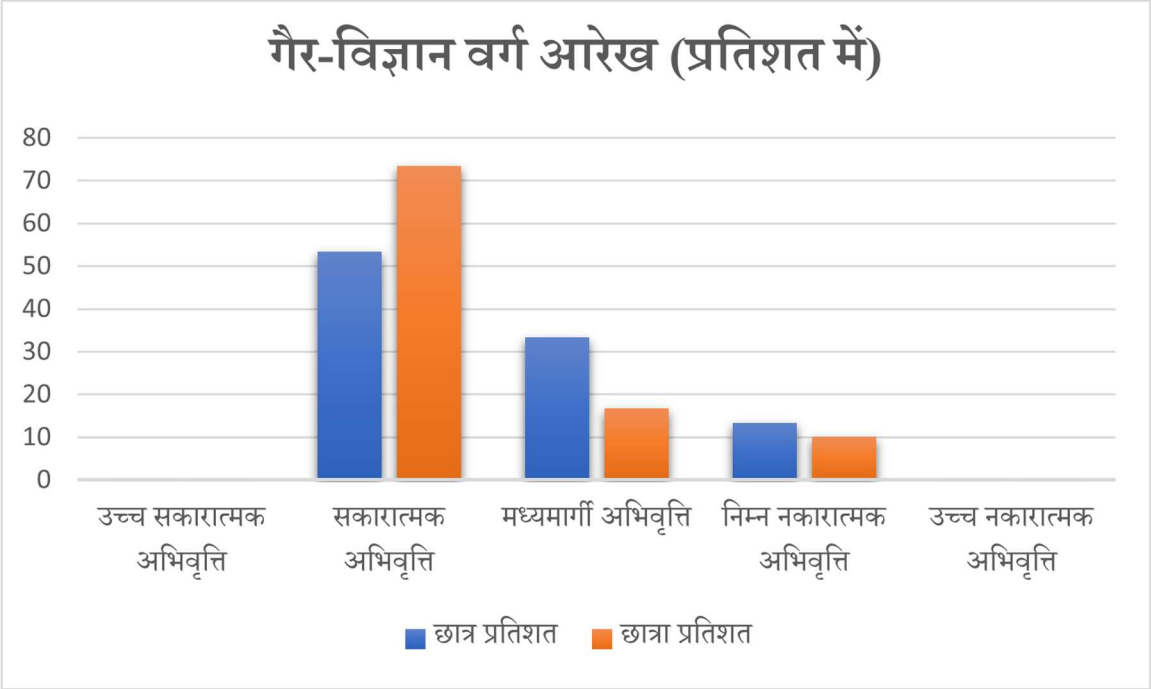

आरेख 2. विश्वविद्यालय छात्रावास के गैर–विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में ड्रग एवं अल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति के मूल प्राप्तांक प्रतिशत की तुलना का आरेखीय प्रदर्शनउपर्युक्त संपूर्ण विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि

विश्वविद्यालय छात्रावास के गैर–विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में ड्रग एवं अल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है, क्योंकि दोनों के मध्य टी–गणना मान 2.26 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर पर निर्धारित तालिका मूल्य 2.0040 से अधिक है, अतः मान सार्थक है। जिसके फलस्वरूप शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि विश्वविद्यालय छात्रावास के गैर–विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में ड्रग एवं अल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है। दोनों सामान प्रकार से अभिवृत्ति नहीं रखते हैं, सांख्यिकीय गणना के अनुसार छात्राओं का मध्यमान, छात्रों के मध्यमान से अधिक पाया गया जिसका तात्पर्य यह हुआ कि छात्राओं की अभिवृत्ति, छात्रों की अभिवृत्ति से उच्च है। विश्वविद्यालय छात्रावास के गैर–विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में अंतर पाए जाने के कारण उनकी शिक्षा के प्रति रुचि, बुद्धिलब्धि, जिज्ञासा, सामाजिक वातावरण, पारिवारिक वातावरण, छात्रावास का वातावरण, विश्वविद्यालय वातावरण, धार्मिक वातावरण, मनोवैज्ञानिक वातावरण, दबाव, व्यवसाय एवं रोजगार के लिए संघर्ष, पारिवारिक दबाव, पारिवारिक जिम्मेदारी, सामाजिक अवहेलना, आदि कारण हो सकते हैं। साथ ही छात्र एवं छात्रों में व्यक्तिगत भिन्नताएं भी इसका कारण हो सकती हैं।

उद्देश्य 03– विश्वविद्यालय छात्रावास के विज्ञान वर्ग एवं गैर–विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में ड्रग एवं एल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

सांख्यिकीय परिकल्पना $H_{0\ 03}$ – विश्वविद्यालय छात्रावास के विज्ञान वर्ग एवं गैर–विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में ड्रग एवं अल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति के फलांकों के मध्यमान में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	मुक्तांश	सार्थकता स्तर	टी मान	परिणाम
विज्ञान वर्ग	60	63.07	11.20	2.09	118	0.05	**0.48**	असार्थक
गैर-विज्ञान वर्ग	60	64.07	11.67					

तालिका 5. विश्वविद्यालय छात्रावास के विज्ञान वर्ग एवं गैर–विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में ड्रग एवं अल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति का सांख्यिकीय मान

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 5 से स्पष्ट है कि विश्वविद्यालय छात्रावास के विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की ड्रग एवं अल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 63.07 एवं मानक विचलन 11.20 है तथा गैर– विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की ड्रग एवं अल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 64.07 तथा मानक विचलन 11.67 है एवं मानक त्रुटि 2.09 है।

इसका टी–परीक्षण मान 0.48 प्राप्त हुआ, जो कि 0.05 सार्थकता स्तर के मुक्तांश (कि) 118 पर टी–सारणी मान 1. 980 से कम है, अतः मान असार्थक पाया गया। जिसके फलस्वरूप शून्य परिकल्पना को स्वीकार करते हुए कहा जा सकता है कि विश्वविद्यालय छात्रावास के विज्ञान वर्ग एवं गैर–विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में ड्रग एवं अल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।

मूल स्कोर	व्याख्या	विश्वविद्यालय छात्रावास के विज्ञान वर्ग एवं गैर-विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी (प्रतिशत में)					
		विज्ञान वर्ग संख्या	विज्ञान वर्ग प्रतिशत	गैर-विज्ञान वर्ग संख्या	गैर-विज्ञान वर्ग प्रतिशत	कुल संख्या	कुल प्रतिशत
101-130	उच्च सकारात्मक अभिवृत्ति	0	0	0	0	0	0
61-100	सकारात्मक अभिवृत्ति	37	61.66	38	63.33	75	62.5
51-60	मध्यमार्गी अभिवृत्ति	13	21.66	15	25	28	16.66
30-50	निम्न नकारात्मक अभिवृत्ति	10	10	7	11.66%	17	14.16
30 and below	उच्च नकारात्मक अभिवृत्ति	0	0	0	0	0	0
योग		60	100%	60	100%	120	100%

तालिका 6. विश्वविद्यालय छात्रावास के विज्ञान वर्ग एवं गैर–विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में ड्रग एवं अल्कोहल के प्रति भिवृत्ति के मूल प्राप्तांक की तुलना तालिका

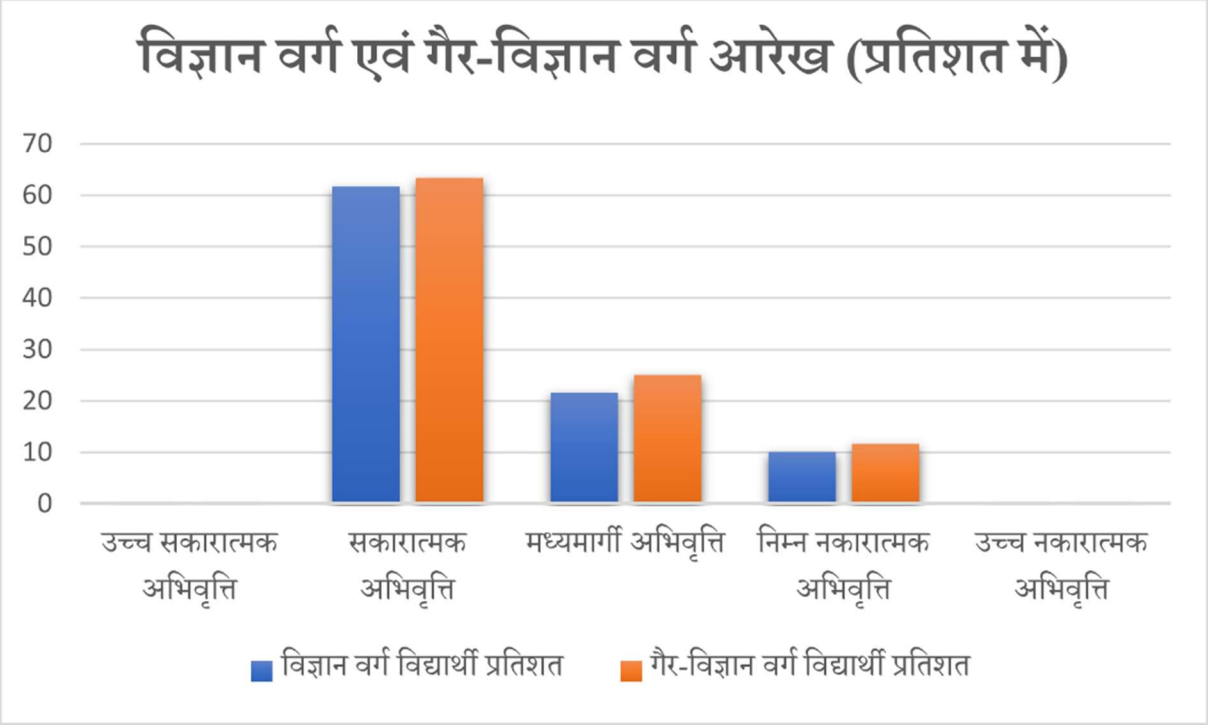

आरेख 3. विश्वविद्यालय छात्रावास के विज्ञान वर्ग एवं गैर–विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में ड्रग एवं अल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति के मूल प्राप्तांक प्रतिशत की तुलना का आरेखीय प्रदर्शन

उपर्युक्त संपूर्ण विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि विश्वविद्यालय छात्रावास के विज्ञान वर्ग एवं गैर–विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में ड्रग एवं अल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है, क्योंकि दोनों के मध्य टी–गणना मान 0.48 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर पर निर्धारित तालिका मूल्य 1.980 से कम है, अतः मान असार्थक है। जिसके फलस्वरूप शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि दोनों समान प्रकार की अभिवृत्ति रखते हैं या हम कह सकते हैं कि उनकी अभिवृत्ति में विषय वर्ग का प्रभाव नहीं है। विश्वविद्यालय छात्रावास के विज्ञान वर्ग एवं गैर–विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में अंतर नहीं पाए जाने का कारण उनकी शिक्षा के प्रति रुचि, बुद्धिलब्धि, जिज्ञासा, सामाजिक वातावरण, पारिवारिक वातावरण, छात्रावास का वातावरण, विश्वविद्यालय वातावरण, मनोवैज्ञानिक वातावरण का समान होना हो सकता है।

14. निष्कर्ष

उपर्युक्त अध्ययन में उद्देश्यों के अनुसार परिकल्पना का परीक्षण किया गया जिसमें विश्वविद्यालय छात्रावास के विज्ञान वर्ग एवं गैर–विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की ड्रग एवं अल्कोहल के प्रति उनकी अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया। अध्ययन करने के पश्चात पाया गया कि विश्वविद्यालय छात्रावास के विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में ड्रग एवं अल्कोहल के प्रति उनकी अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है, जबकि गैर–विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में ड्रग एवं अल्कोहल के प्रति उनकी अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया तथा विज्ञान वर्ग एवं गैर–विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में

ड्रग एवं अल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं प्राप्त हुआ । हालांकि तीनों के माध्य, मानक विचलन तथा टी–मान में जो भी अंतर देखने को मिला उसकी विस्तृत व्याख्या तालिका संख्या 1, 3 एवं 5 में की गई है, लेकिन सार्थकता स्तर 0.05 पर प्रथम परिकल्पना सार्थक, द्वितीय परिकल्पना असार्थक तथा तृतीय परिकल्पना सार्थक पायी गयी।

अतः यह सिद्ध होता है कि विश्वविद्यालय छात्रावास के विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में ड्रग एवं अल्कोहल अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होता है। साथ ही विश्वविद्यालय छात्रावास के गैर–विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राओं में ड्रग एवं अल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर होता है तथा विज्ञान वर्ग एवं गैर–विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में ड्रग एवं अल्कोहल के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होता है ।

15. शैक्षिक निहितार्थ

वर्तमान समय में ड्रग एवं एल्कोहल की लत विद्यार्थियों के लिए घातक सिद्ध होती जा रही है। जिसके कारण उनके अंदर की सामाजिकता एवं नैतिकता विलुप्त हो रही है। जिसके कारण उनकी शिक्षा एवं उनके सामाजिक जीवन पर गहरा प्रभाव भी पड़ रहा है। इसे जड़ से खत्म करने के लिए समाज को स्वयं बेहतर से बेहतर प्रयास करने होंगे तथा विद्यार्थियों को भी यह समझाना होगा कि ड्रग एवं अल्कोहल न केवल उनको बल्कि उनकी वजह से उनके देश को भी खोखला कर रहा है। इसलिए उन्हें अपने भविष्य को सुदृढ़ एवं सुव्यवस्थित बनाने के लिए ड्रग एवं अल्कोहल से दूर रहना चाहिए।

संदर्भ सूची

- कोहेन, एल., मैनियन, एल. एवं मॉरिसन, के. (2018). रिसर्च मेथड इन एडुकेशन (अष्टम संस्करण). रॉटलेज़
- क्रेसवेल, जे.डब्ल्यू. (2013). एजुकेशनल रिसर्चः प्लानिंग, कंडक्टिंग एंड इवैल्युएटिंग क्वॉटिटेटिव एंड क्वालिटेटिव रिसर्च (चतुर्थ भारतीय संस्करण). पी.एच.आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड.
- गुप्ता, एस.पी. (2022). अनुसंधान संदर्शिकाः संप्रत्यय, कार्यविधि एवं प्रविधि. शारदा पुस्तक भवन.
- गुप्ता, एस. (2012). सोशल प्रॉब्लम. रावत पब्लिशर.
- जॉन, एल. (2019). साइकोलॉजिकल कैरेक्टरिस्टिक ऑफ नॉन एल्कोहल एण्ड एल्कोहल कॅन्जम्प्शन एमंग फुटबॉल प्लेयर्स . पांडिचेरी विश्वविद्यालय. http://hdl.handle.net/10603/381583
- बिजॉय, जे. (2022). चयनित कन्या महाविद्यालयों भोपाल मध्य प्रदेश के कॉलेज छात्रों के बीच नशीली दवाओं की सुविधा वाले यौन शोषण डीएफएसए के संबंध में ज्ञान और दृष्टिकोण पर शैक्षिक ऐप की प्रभावशीलता का आकलन. एल एन सी टी यूनिवर्सिटी. http://hdl.handle.net/10603/455425
- बेस्ट, जे.डब्ल्यू. एवं काह्न, जे.वी. (2006). रिसर्च इन एडुकेशन (दशम संस्करण). पीयर्सन.

- मंगल, एस.के. (2021). शिक्षा मनोविज्ञान. पीएआई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड.
- मिश्रा, के. (2016). विद्यार्थियों में नशे की प्रवृत्ति के संदर्भ में असुरक्षा की भावना और मानसिक स्वास्थ्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन. आईसेक्ट विश्वविद्यालय. http://hdl.handle.net/10603/192899
- माथुर, एस.एम. (2008). शिक्षा मनोविज्ञान. नीलकमल प्रकाशन.
- शर्मा, आर.ए. (2008). शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक मूलआधार. आर. लाल बुक डिपो.
- सिंह, एम. एवं निवास, आर. (2017). एटीट्यूड ऑफ सीनियर सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट टुवार्ड्स एल्कोहल एंड ड्रग विथ रिस्पेक्ट टू जेंडर, रेजिडेंशियल बैकग्राउंड एंड टाइप ऑफ फैमिली. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांसड रिसर्च, 5(6), 529–535. http://dx.doi.org/10.21474/IJAR01/4444
- सिंह, एम. (2017). एटीट्यूड ऑफ एडोलेसेंट टुवार्डस एल्कोहल एण्ड ड्रग्स इन रिलेशन टू देयर पेरेंटिंग एंड पियर प्रेशर. गुरु काशी विश्वविद्यालय. http://hdl.handle.net/10603/193188
- सिंह, एस. (2019). युवाओं में नशे के कारण गिरता शिक्षा का स्तरः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन. जर्नल ऑफ एडवांसड रिसर्च इन एलाइड एजुकेशन,16(1), 2230–7540.
- सिंह, एस. (2015). मादक पदार्थों का सेवन करने वाले परिवारों के किशोर विद्यार्थियों के समायोजन एवं आत्मबोध का अध्ययन.पेसिफिक विश्वविद्यालय. http://hdl.handle.net/10603/339113
- श्रीवास्तव, ए. एवं जैन, आर. (2018). नशा करने वाले तथा न करने वाले विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर के किशोरों के समायोजन का अध्ययन.इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एण्ड एनालिटिकल रिव्यूज, 5(4), 2349–5138.